ORIGINAL RESEARCH PAPER

Education

KEY WORDS:

भगवान दास मोरवाल कृत उपन्यास 'बाबल तेरा देश में' दलितीय चेतना

अजैब सिंह

एम.ए.हिन्दी, नेट, बी.एड, सुपुत्र श्री कुन्दन सिंह गांव चक्क बजीदा, पोस्ट ऑफिस घुबाया, तहसील जलालाबाद पश्चिम जिला फाजिल्का–१५२०२४ (पंजाब).

इस दुनिया में जितने भी महापुरूष हुए हैं उनके जीवन में तत्कालीन परिस्थितियों का मुख्य हाथ रहा। जब महात्मा गांधी दक्षिण अफ्रीका में थे तब वहां के गोरे अंग्रेज, अफ्रीकियों व भारतीयों से नफरत करते थे। उस नफरत ने गांधी जी को आन्दोलन करने के लिए प्रेरित किया। स्वामी दयानन्द ने शिवरात्रि के दिन देखा कि लोग अन्धविश्वासों में घिरे हुए हैं। उन्होंने सच्चे शिव की खोज के लिए घर छोड़ दिया और एक दिन अपने ज्ञान के प्रकाश से विश्व को सत्य का मार्ग दिखाया। महात्मा बुद्ध चार दृश्यों को देखकर इतने दुःखी हुए कि घर छोड़कर सुख का कारण जानने के लिए दर–दर घूमते रहे और आखिर उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ। सम्राट् अशोक में भी ऐसा परिवर्तन आया।

यही बाबा साहेब के जीवन में घटित हुआ। यदि उस समय छुआछूत न होती, उन्हें जाति–पाति के इन्द्रजाल से न गुजरना होता और उनके साथ बचपन में स्कूल में घृणित व्यवहार न किया गया होता तो शायद अम्बेडकर इतने ऊँचे शिखर पर न पहुँचते और पहुँचते भी तो दूसरे ढंग से उनके जीवन का अध्ययन हुआ होता। परिस्थितियों ने उन्हें संघर्ष के लिए विवश किया। ज्यों–ज्यों छुआछूत की घटनाएं उनके जीवन में घटती गई उनका संकल्प और भी दृढ़ होता चला गया और उन्हें यह कहने के लिए विवश कर दिया 'यदि मैं हिन्दू धर्म से छुआछूत को दूर न कर सका तो अपने आपको गोली मार लूँगा'। उन्होंने अपना सारा जीवन अपने साथ हुए अपमान का बदला लेने के लिए अर्पित कर दिया।

अब प्रश्न उठता है कि अम्बेडकर के समय की परिस्थितियां कैसी थीं? यदि हम अम्बेडकर के जीवन पर आद्योपान्त नजर डालें तो उनका सारा जीवन हिन्दू समाज की छुआछूत की बीमारी को खत्म करने के लिए घूमता नजर आता है। उनका एक ही लक्ष्य था इस बुराई को जड़ से समाप्त करके समाज में समता का वातावरण पैदा करना तथा अपने बन्धु–बान्धवों को उस अपमान से बचाना जो उन्होंने अपने जीवन में सहन किया था।

छुआछूत हिन्दू धर्म में कोई नई बीमारी नहीं थी। यह काफी समय से चली आ रही थी। ऋग्वेद और यजुर्वेद के पुरूषसूक्त में चार वर्णों का उल्लेख मिलता है – ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैष्णव और शूद्र। इन सभी वर्गों में ब्राह्मणों का उत्तम स्थान था। शूद्र सबसे नीचे समझे जाते थे। इस तरह से वर्ण–व्यवस्था को देवीय मान्यता प्राप्त थी। यह अवस्था वैदिक युग में चलती रही। लेकिन स्मृतिकाल में इसमें काफी परिवर्तन हुआ। वर्णों ने जाति का स्थान ले लिया। वे जन्म के आधार पर रूढ़ हो गए। शूद्रों को घृणित दृष्टि से देखा जाने लगा। महाभारत में तो यह कहा गया कि शूद्र तीनों वर्णों की सेवा करने वाला दास है। शूद्र, ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ और संन्यास आश्रमों के अनुसार जीवन नहीं बिता सकता था। स्मृतिकाल में तो शूद्रों की हालत और भी दयनीय हो गई। उनके पढ़ने के द्वार हमेशा के लिए बन्द कर दिए गए।

मध्यकाल में अछूतों की हालत और भी खराब थी। उस समय अनेक संतो ने जन्म लिया और उन्होंने जाति–पाति तथा अन्धविष्वास के खिलाफ आवाज उठाई। इन संतो में गुरू रविदास, नामदेव, रामानुज, कबीर, गुरू नानक, ज्ञानेष्वर आदि विशेश उल्लेखनीय हैं। ठीक है इन्होंने भाई–चारे का सन्देश दिया तथा आडम्बरों का भी खण्डन किया लेकिन उनका ज्यादा जोर आत्मा–परमात्मा पर रहा। किसी ने भी छुआछूत के खिलाफ आन्दोलन नहीं चलाया, न ही किसी राजा महाराजा ने समाज की दशा सुधारने का काम किया। वे ऊँची जाति के लोगों के रहम पर जीने लगे। उनकी दोहरी गुलामी थी – एक तो राजा महाराजाओं की तथा दूसरी उच्च श्रेणी के लोगों की।

'बाबल तेरा देश में – भगवान दास मोरवालः–

भगवानदास मोरवाल का यह उपन्यास राजस्थान के मेवात अंचल के मुस्लिम परिवेश को आधार बनाकर लिखा गया एक वृहत उपन्यास है। प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने पितृसत्तात्मक सत्ता के खिलाफ लड़ाई को बहुत ही रोचक अंदाज से चित्रित किया है। यह उपन्यास स्त्रियों के उन दुखों को व्यक्त करता है जो अपने घर–परिवार में ही सुरक्षित नहीं हैं। कहीं पिता तो कहीं भाई, कहीं ससुर, कहीं पति तो कहीं रिश्तेदार आदमखोर भेडियों के रूप में शिकार के लिए ताक में रहते हैं। यहां तक कि धार्मिक ग्रंथ व उनमें उल्लेखित उपदेश भी उनके जान के दुश्मन बने हुए हैं असगरी एक बेवा महिला है जिसके बेटे का नाम फत्तू है। एक दिन वह गांव से अपनी मां के गहनों को लेकर भाग जाता है। असगरी बहुत परेशान हो जाती है। गांव के ही धन सिंह, नसीब खां और जैतूनी उसकी इस कठिन परिस्थितियों में मदद करते हैं।

असगरी फत्तू के इस कारनामे से बहुत दुखी होती है व उसे अपने मन से भुला देती है। पर एक दिन फत्तू दुल्हन के साथ गांव में आता है। फत्तू की दुल्हन इतनी सुंदर कि फत्तू व उसकी मां गांव के लोगों के लिए जलन का कारण बन गए हैं, ''इस तरह दोनों मां–बेटे यानि असगरी व फत्तू सारे मोहल्ले में सम्मान पाते हैं और जलन का कारण भी बनते हैं। जिस असगरी के लिए आजतक सहानुभूति उमड़ पड़ती थी, वही असगरी ज्यादातर घरों के बड़ी –बूढियों की आंख की किरकरी बन गई। जिस फत्तू को पूरा मोहल्ला एक तरह से भूल चुका था, वही फत्तू इस कहावत का जीत–जागता पाठ बन गया कि उपर वाले के यहां देर है अंधेर नहीं।'' गांव की औरतें फत्तू की दुल्हन की जाति बिरादरी आदि का प्रश्न लेकर सदैव असगरी को घेरती रहती थी।'' बाद में पता चला कि फत्तू की दुल्हन ब्राहमण है। अब तो असगरी को मोहल्ला बिरादरी द्वारा अपने को समाज से बाहर होने का डर सताने लगा पर नसीब खां साहस देते हुए कहा, ''मोहल्ला और बिरदरी को मार गोली। बखत पड़े सब पीछे हट जाते हैं। कोई न मूते हैं काई का चिरा पे। आराम सू बहू की सेवा–पानी करो और हां रे फत्तू बोहडिया से कह दीजो सास की सेवा में कोई कसर नहीं रहनी चाहिए।''[2]

गांव में एक घर नहीं हवेली है जिसको गांव में हाजी चांदमल की हवेली के नाम से जाना जाता है यह हवेली कभी अरजन की हवेली के नाम से जाती थी। पर उनकी मृत्यु के बाद हाजी चांदमल की हवेली के नाम से जानी जाती है। क्योंकि नसीब खां की केवल एक बेटी रईसन है जो कि अपने घर चली गई। इसलिए नसीब खां इस पर कोई ध्यान नहीं देता हैं हाजी चांदमल के तीन बेटे हैः बली मोहम्मद, हसन मोहम्मद और दीन मोहम्मद। हाजी चांदमल को अपनी बहू जुम्मी के साथ सोनदई ने ज्वार के खेतों में देखा। सोनदेई को देख कर चांदमल तो भाग गया। जुम्मी की सख्ती पर सोनदेई कहती है, ''बहन उ तो सूखा पत्ता सी कांपन लगी और आंसू पहले कि मैं कुछ फैसला करती जुम्मी खुदी गिरती–पड़ती आई और मेरा पांवन में गिरते हुई बोली बत्तो, काई सू कहिया मत, नहीं तैं जीते–जी मर जाउंगी। मैं उमर भर तेरी बांदी बणके रहूंगी। तेरा पांवों धो–धो के पिउंगी। या गाय की लाज तेरा हाथ में है।''[3]

कहते हैं, बाप का असर बेटे पर भी जाता है। हाजी चांदमल का बेटा भी चांदमल के ही नक्शे कदम पर चलता है। एक दिन वह अपने छोटी बहू हसीना पर रात में सोते समय अकेले पाकर बुरी नियत से झपट पड़ा ''और जैसे ही दीन मोहम्मद ने हसीना का नाडो खींचों। वाने ढेढ़ का गोसान अंडकोश में ऐसी लात मारी की हरामी विलविलाता हुआ हूनी वहीं बैठगो। बहू ने फटाफट मौको देखो और नीचे आके अपनी ददिया सास जैतूनी सू लिपटगी।''[4] हवेली पर इस घटना का असर यह पड़ा कि दीन मोहम्मद को हवेली से बाहर जाना पड़ता है। हवेली की औरतों में अपने मर्दों के प्रति अविश्वास उत्पन्न हो गया। ये अपनी ही आंखों में आंखे डालकर जैसे बतियाना भूल गई। कई महीनों के बाद दीन मोहम्मद हवेली में हैदराबाद से शकीला नाम की लड़की जो कि उससे बहुत कम उम्र की है से शादी करके वापस आता है। शकीला दसवीं तक पढ़ी–लिखी है। शकीला के आने से हवेली के साथ–साथ पूरे गांव की हालत बदलती है। वह हवेली की लड़कियों के अलावा हीरा व पारो के लड़कियों को भी पढ़ाती है। शकीला हवेली के सभी सदस्यों के लिए ईर्ष्या का पात्र बन गई है क्योंकि केवल शकीला ही पुरूषों की सत्ता को चुनौती देने का साहस करती है। यूनुस जो कि हवेली का पढ़ा लिखा लड़का है शकीला की पढ़ाई लिखाई का इस तरह खिल्ली उड़ाता है, ''अरी, याके मुं काई लू लगो है। जो चलो चार दिन की मुसल्ली ऐसेई अल्ला–अल्ला करे है। दो हरप कहा पढ़ेगी हमने समझा रही है पढ़ाई–लिखाई का मतलब'' शकीला इन सब बातों से बहुत परेशान हो उठती है। वह अपने को बहुत अकेली एवं मजबूर महसूस करती है। ''पहली बार शकीला का इस हवेली में दम घुटता लगता है। इतनी दुखी तो वह तब भी नहीं हुई थी जब इस हवेली ने उसके मुसलमान होने पर शक किया था। इतनी बैचन तो वह उस दिन भी नहीं हुई थी, जिस दिन वह अपनी उन साड़ियों को इनकी नजर से बचाते हुए कौशल्या और रामरती के लिए कन्यादान स्वरूप दे आई थी। वह तो इनकी अज्ञानता थी लेकिन शकीला यूनुस की इस सोच को क्या कहे?'' दादी जैतूनी शकीला की भावनाओं को समझती है। पर वह भी पुरूषों के सामने अपने को असहाय समझती है।

मुमताज, फौजिया, सबीना फिरोजा समेत मैना और असगरी की तीन, पोतियां सलीमा, नफीसा और नसरीन को पढ़ाने के शकीला के फैसला का हवेली द्वारा विरोध होता है पर वह अपने फैसले पर अडिग है तथा अपने पति दीन मोहम्मद द्वारा इसको मदरसा खोलना कहने पर वह बहुत नाराज होती है तथा बोलती है,''जनाब दीन मोहम्मद मैं कोई मदरसा नहीं खोल रही हूं। बस थोडा सा समय निकाल कर इस हवेली की बच्चियों को पढ़ा देती हूं ताकि ये इस हवेली की दूसरी औरतों की तरह जाहिल न रहें।''[5] शकीला के इस महत्वपूर्ण काम को जहां हवेली के पुरूश व महिलाएं नहीं समझती है तथा उसके प्रति उपेक्षा का माहौल अपनाती हैं वहीं गांव की वृद्ध महिला असगरी, शकीला के इस कार्य को बहुत ही उपयोगी एवं दो कुल को उज्जवल करने वाला बताती है।

सरकार द्वारा गांव में सरपंच के लिए महिला सीट क्या घोषित की मर्दों के चेहरों की रौनक ही चली गई। बैठक–कचैडियों से लेकर बंगले–पौलियों में हर ओर बस इसी बात की चर्चा हो रही है। इस मुददे पर चांदमल, रामचंदर से कहता है, ''तो याको मतलब ई हुओ रामचंदर के ई मुलक तो मुलक अब इन गांवन में भी ये वीरवाणी करंगी हमारे उपर राज। अब ये देगी हमन्ने हुक्म के हमन्ने का करनों है। रामचन्दर, असगरी आदि ने शकीला को सरपंच का प्रत्याशी बनाने के लिए कचैडी में नसीब खां, चांदमल आदि के सामने प्रस्ताव रखा? जहां एक ओर नसीब खां इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लेता है वही उसका भाई चांदमल, नसीब खा के निर्णय के विरोध में कहता है, ''तो अब या हवेली की लुगाई पंचन के बीच में धंसके बैठगी, ना भाई धन सिंह, चाहे बुरा मान या भलो मान हमन्ने ना मंजूर तिहारी ई सलाह।''[6] जैतूनी इन बातों को सुनकर बहुत नाराज होती है। वह रूठ कर असगरी से कहती है, '' असगरी, मैं सब देख रही हूं इन मर्दन का चलिंतर ए। हम लुगाई तो जैसे आदमी की जात ही ना है। ये मरद ही जाणे है पंचन के बीच में बैठणो, हम तो जैसे जाणेई ना है।'' अतंतः सर्वसम्मति से हवेली ने सरपंच पद के लिए शकीला को उम्मीदवार घोषित कर दिया और चुनाव शकीला ने सालिगराम के लड़के की पत्नी को पराजित कर दिया। हवेली ने शकीला को सरपंच का उम्मीदवार यह सोचकर बनाया था कि शकीला तो नाममात्र की सरपंच रहेगी सरपंची की पूरी बागडोर तो हवेली के आदमियों या दीन मोहम्मद के पास ही रहेगी। पर ऐसा होता नहीं है। शकीला सरपंची के काम काज में दीन मोहम्मद का हस्तक्षेप सहन नहीं कर पाती और एक दिन एक गलत विल पर साइन किए जाने के लिए दीन मोहम्मद द्वारा दबाव बनाए जाने पर शकीला कहती है, ''साइन तो मैं कर देती हूं पर इस विल के साथ–साथ यह कागज भी दे देना अपने बी.डी.ओ. साब को।'' दीन मोहम्मद द्वारा पूछने पर बताती है कि कागज सरपंची से इस्तीफा है मेरा। हवेली के सदस्यों द्वारा बहुत समझाने–बुझाने पर यद्यपि शकीला ने अपना इस्तीफा वापस ले लिया पर अब यह साफ हो गया कि बिना शकीला की मरजी के सरपंची का कोई काम अब नहीं हो सकता।

शकीला के सरपंच बनने से हवेली में पुरूषों को चुनौती मिलनी शुरू हो गई। पूरी हवेली के लोगों का मानना है कि जो भी हो रहा है वह अच्छा नहीं हो रहा है, ''एक भय एक आशंका यहां तक की संभावित अनिश्चितता सबको अंदर से उद्वेलित किए जा रही है। दीनमोहम्मद की तो उसके बाद हिम्मत नहीं होती कि वह किसी दस्तावेज पर शकीला के साइन करा ले। यहां तक

कि वह शकीला से ये भी नहीं पूछ पाता कि उसे बिना बताए कहां चल देती है।''[8] शकीला बीडीओ का तबादला करवा देती है और जो औरतें कभी घर से बाहर नहीं निकली थी उनको ट्रैक्टर में ब्लॉक दफ्तर ले जाती है। बीडीओ कार्यालय से लौटने के बाद सारी औरतें अपने को बहुत उत्साहित महसूस करती हैं। शकीला को राज्य के राज्यपाल द्वारा उसके किए कामों के लिए सार्वजनिक रूप से सम्मानित किया जाता है।

काफी समय से शांत हवेली में फिर से हलचल शुरू हो जाती हैं। विषय है मुमताज द्वारा अपनी बीबी शगुफ्ता को तलाक देना। तलाक देने पर इस्लाम धर्म के नियम कानून पर अनेक तरह से विचार–विमर्श होने के बाद भी शगुफ्ता को हवेली छोड़ हमेशा के लिए जाना पड़ता है। हवेली के लिए एक और समस्या उस वक्त खड़ी हो जाती है जब यह पता चलता है कि दीन मोहम्मद हैदराबाद, बिहार व उत्तरप्रदेश से लड़कियों को खरीदकर मेवात में पुरूषों को बेचता है। लड़कियों को पुरूषों द्वारा प्रताडित करने पर दीन मोहम्मद के कारनामें का भेद तब खुलता है, जब प्रताड़ित लड़कियां हवेली में अपने बचाव के लिए दस्तक देती हैं। शकीला इससे बहुत परेशान हो जाती है तथा दीन मोहम्मद को खूब खरी–खोटी सुनाती है। हवेली को कई बार पीड़ित लड़कियों की देखभाल के साथ–साथ उन्हें उनके भविष्य में होने वाली परेशानियों से बचाने के लिए नेक पुरूषों का साथ भी खोजना पड़ा। शकीला इस बार सरपंच का चुनाव सालीगराम के लड़के की बहू से भारी अंतर से हार गई। इस हार के कारण शकीला का काम–काज न होकर हिंदू व मुसलमान के नाम पर इलेक्शन होना रहा। धन सिंह इस संबंध में वली मोहम्मद से कहता है, ''मेरा मुं ए क्यों खुलवायो हो। इन इलेक्सन में वोट आदमी और आदमी के काम पर ना गिरी है बल्कि हिंदू और मुसलमान के नाम पर गिरी है।''[9]

इसी बीच हवेली या यों कहें कि एक महिला की दुर्दशा की नीवं फिर से तैयार हो गई है इसका कारण मुमताज की शादी होने के बाद से ही उसका अपने पति अखलाक से खुश न होना रहा। मुमताज पंद्रह दिन बाद ही अपने सुसराल से वापस लौट आयी तो सचमुच हवेली में जलजला सा आ गया। इसका कारण मुमताज द्वारा अखलाक का शारीरिक तौर पर कमजोर होना बताया गया है। अंत में मुमताज न चाहते हुए भी हवेली की इज्जत के खातिर पुनः अपनी सुसराल जाने के लिए तैयार होती है पर अनहोनी यह घटती है कि मुमताज का पति अखलाक पंखे से लटककर आत्महत्या कर लेता है।

इस तरह हाजी की हवेली पर एक के बाद एक दोष लगते रहे। इस वजह से लोग हवेली के लिए असगरी, समीजा व शगुफता आदि महिलाओं द्वारा दिया गया श्राप मानते हैं। रामचंद्र व धन सिंह जिसको हवेली में जाये बिना चैन नही आता था अब वे भी हवेली जाने से कतराते हैं। हवेली के लिए दुखमय स्थिति तब पैदा हो गई जब दीनमोहम्मद का असामायिक निधन हो जाता है। शकीला जमीन–जायदाद में हिस्से मांगती है तो हवेली वाले उसे दुत्कारते हुए कहते हैं कि बाप की जायदाद में बेटियों का हक नहीं होता है। इस संबंध में नसीब खां जैतूनी से कहता है, ''तोहे याद ना है, जब रईसन ने एक बार मेरा हिस्सा में से अपणों हक मांगों हो, तो सारी हवेली कैसे एक होगी ही के कही बाप की जादाद में बेटी का हक होवे है। सारों हक या तो बेटान को होवे हैं और अगर बेटा ना है तो चाचा ताउ का छोरन का होवे।''[10] हवेली की औरतों का शकीला के प्रति सहानुभूति तो है पर मर्दों के आगे उनकी एक न चलती है। दादी जैतूनी भी अपना अंतिम हथियार डालते हुए कहती है, ''शकीला बेटी बस तू अपना दिन काट लें। मत देख या जमीन–जायदाद में सू हिस्सा लेणा का सुपना।''[11] और मजीदन अपना सारा गुस्सा शकीला पर निकालते हुए कहती है, ''रांड, तैने ये तीन–तीन चीकली लड़कियां जनके रख दी कम से कम एक बेटा ही जन देती तो आज ये दिन तो न देखना पड़ता।''

सन्दर्भ

(1) भगवानदास मोरवालः बावल तेरा देश में, पृश्ठ–114
(2) वही, पृश्ठ–115
(3) वही, पृश्ठ–117
(4) वही, पृश्ठ–119
(5) भगवानदास मोरवालः बावल तेरा देश में, पृश्ठ–120
(6) भगवानदास मोरवालः बावल तेरा देश में, पृश्ठ–127
(7) भगवानदास मोरवालः बावल तेरा देश में, पृश्ठ–128
(8) वही, पृश्ठ–129
(9) भगवानदास मोरवालः बावल तेरा देश में, पृश्ठ–129
(10) वही, पृश्ठ–131
(11) वही, पृश्ठ–132